एकादशः पाठः

# उद्भिज्ज-परिषद्

प्रस्तुत पाठ 'उद्भिज्ज-परिषद्' पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य की निबन्ध पुस्तक 'प्रबन्ध मञ्जरी' से संक्षिप्त करके लिया गया है। श्रीभट्टाचार्य का समय 1850-1913 ई. है। संस्कृत के आधुनिक गद्यकारों में इनका अन्यतम स्थान माना जाता है। निबन्ध-लेखन की दृष्टि से तो ये अद्वितीय हैं ही, संस्कृत में व्यंग्य शैली का प्रादुर्भाव इनके ही निबन्धों से माना जायेगा। ये ओरियन्टल कॉलेज, लाहौर में संस्कृत के प्राध्यापक थे। इन्होंने 'विद्योदय' नामक संस्कृत पत्रिका का 44 वर्षों तक बड़ी योग्यता के साथ सम्पादन किया। इनका 'प्रबन्ध-मञ्जरी' नामक लेख-संग्रह-ग्रन्थ 1930 में प्रकाशित हुआ था। इस ग्रन्थ की भाषा अत्यन्त सरल, सरस तथा प्रवाहपूर्ण है। इनकी भाषा में महाकवि बाण की शैली की छाप स्पष्ट देखी जा सकती है।

उद्भिज्ज शब्द का अर्थ है- वृक्ष और परिषद् का अर्थ है सभा। इस शब्द का अर्थ हुआ 'वृक्षों की सभा।' इस सभा के सभापति हैं अश्वत्थ-पीपल। वे अपने भाषण में मानवों पर बड़े ही व्यंग्यपूर्ण प्रहार करते हैं।

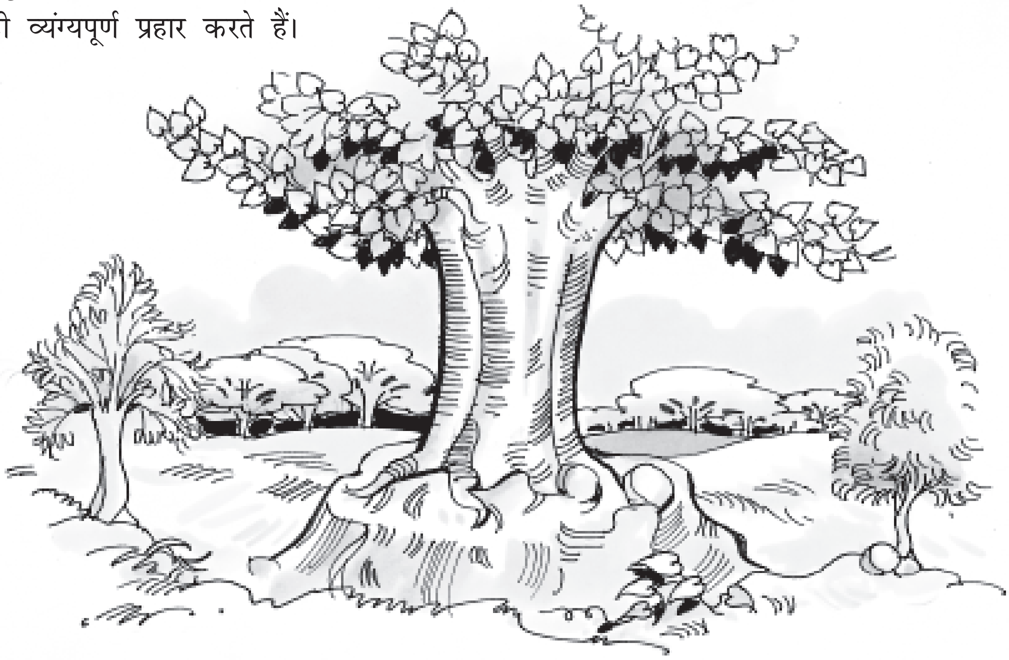

अथ सर्वविधविटपिनाम् मध्यभागे स्थितः सुमहान् अ श्वत्थदेवः वदति-भो भो वनस्पतिकुलप्रदीपा महापादपाः कुसुमकोमलदन्तरुचः लता- कुलललना श्च! सावहिताः शृण्वन्तु भवन्तः। अद्य मानववार्तैवास्माकं समालोच्यविषयः। मानवा नाम सर्वासु सृष्टिधारासु निकृष्टतमा सृष्टिः, जीवसृष्टिप्रवाहेषु मानवा इव पर-प्रतारकाः स्वार्थसाधनपरा मायाविनः कपट-व्यवहारकुशलाः हिंसानिरताः जीवाः न विद्यन्ते। भवन्तो नित्यमेवारण्यचारिणः सिंहव्याघ्रप्रमुखान् हिंस्रत्वभावनया प्रसिद्धान् श्वापदान् अवलोकयन्ति। ततो भवन्त एव कथयन्तु याथातथ्येन किमेते हिंसादिक्रियासु मनुष्येभ्यो भृशं गरिष्ठाः। श्वापदानां हिंसाकर्म किल जठरानलनिर्वाणमात्रप्रयोजकम्। प्रशान्तजठरानले सकृदुपजातायां स्वोदरपूर्तौ नहि ते करतलगतानपि हरिणशशकादीन् उपघ्नन्ति। न वा तथाविध-दुर्बलजीवानां घातार्थम् अटवीतोऽटवीं परिभ्रमन्ति।

मनुष्याणां हिंसावृत्तिस्तु निरवधिः। पशुहत्या तु तेषाम् आक्रीडनम्। केवलं विक्लान्तचित्तविनोदाय महारण्यम् उपगम्य ते यथेच्छं निर्दयं च पशुघातं कुर्वन्ति। तेषां पशुप्रहार-व्यापारमालोक्य जडानामपि अस्माकं विदीर्यते हृदयम्।

निरन्तरम् आत्मोन्नतये चेष्टमानाः लोभाक्रान्त-हृदयाः मनुजन्मानः किल प्रतिक्षणं स्वार्थसाधनाय सर्वात्मना प्रवर्तन्ते। न धर्ममनुधावन्ति, न सत्यमनुबध्नन्ति। परं तृणवद् उपेक्षन्ते स्नेहम्। अहितमिव परित्यजन्ति आर्जवम्। अमङ्गलमिव उपघ्नन्ति विश्वासम्। न स्वल्पमपि बिभ्यति पापाचारेभ्यः, न किञ्चिदपि लज्जन्ते मुहुरनृतव्यवहारात्। नहि क्षणमपि विरमन्ति परपीडनात्।

न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि निस्सारा एव। तृणानि खलु वात्यया सह स्वशक्तितः सुचिरमभियुध्य सम्मुखसमरप्रवर्तमाना वीरपुरुषा इव शक्तिक्षये क्षितितले निपतन्ति, न तु कदाचित् कापुरुषा इव स्वस्थानम् अपहाय प्रपलायन्त। मनुष्याः पुनः स्वचेतसा एव भविष्यत् समये संघटिष्यमाणं कमपि विपत्पातमाकलय्य परिकम्पमानकलेवराः दुःख-दुःखेन समयमतिवाहयन्ति। परिकल्पयन्ति च पर्याकुला बहुविधान् प्रतिकारोपायान् येन मनुष्यजीवने शान्तिसुखं मनोरथपथादतिक्रान्तमेव।

अथ ते तावत्तृणेभ्योऽप्यसाराः पशुभ्योऽपि निकृष्टतरा श्च। तथा च तृणा-दिसृष्टेरनन्तरं तथाविधजीवनिर्माणं वि श्वविधातुः कीदृशं नाम बुद्धिमत्ताप्रकर्षं प्रकटयति।

**इत्येव हेतुप्रमाणपुरस्सरं सुचिरं बहुविधं विशदं च व्याख्याय सभापतिर श्वत्थदेव उद्भिज्ज-परिषद् विसर्जयामास।**

## शब्दार्थाः टिप्पणयश्च

| | | |
|---|---|---|
| **उद्भिज्जः** | – | (उद्भिज्य जायते इति उद्भिज्जः) वनस्पति |
| **विटपी** | – | (विटप + इन्) वृक्ष |
| **अश्वत्थः** | – | पीपल का पेड़ |
| **कुलललनाः** | – | कुलस्य ललनाः, कुल की स्त्रियाँ |
| **सावहिता** | – | सावधान |
| **सृष्टिधारासु** | – | सृष्टेः धारा, षष्ठी तत्पुरुष समास सृष्टिधारा, तासु, सृष्टि की परम्परा में |
| **निकृष्टतमा** | – | निकृष्ट + तमप्, अत्यधिक नीच |
| **परप्रतारकाः** | – | परस्य प्रतारकः, षष्ठी तत्पुरुष समास, दूसरे को पीड़ित करने वाले |
| **श्वापदान्** | – | जंगली जानवरों को |
| **याथातथ्येन** | – | वस्तुतः |
| **भृशम्** | – | अत्यधिक |
| **जठरानल-निर्वाणम्** | – | जठरानलस्य निर्वाणम् षष्ठी तत्पुरुष समास, पेट की अग्नि, भूख की शान्ति |
| **करतलगतान्** | – | करतलगतान्, हाथ में आये हुए |
| **उपघ्नन्ति** | – | उप + हन् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन, मारते हैं |
| **घातार्थम्** | – | मारने के लिए |
| **अटवीतः अटवीम्** | – | अटवी + तस्, एक जंगल से दूसरे जंगल को |
| **निरवधिः** | – | असीम |
| **आक्रीडनम्** | – | आ + कीड् + ल्युट् प्रत्यय, खेल |

| | | |
|---|---|---|
| **विक्लान्तः** | – | वि + क्लम् + क्त प्रत्यय, थका हुआ |
| **उपगम्य** | – | उप + गम् + क्त्वा (ल्यप् प्रत्यय), पास जाकर |
| **सर्वात्मना** | – | पूरे मन से (सभी प्रकार से) |
| **प्रवर्तन्ते** | – | प्र + वृत् + लट् लकार प्रत्यय, प्रथम पुरुष बहुवचन, प्रवृत्त होते हैं |
| **उपेक्षन्ते** | – | उप + ईक्ष् + लट्, लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, उपेक्षा करते है |
| **आर्जवम्** | – | ऋजोर्भावः आर्जवम्, सीधापन |
| **बिभ्यति** | – | भी + लट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन, डरते हैं |
| **पापाचारेभ्यः** | – | पापश्चासौ आचारः, पापाचारः तेभ्यः, अनुचित आचरण से |
| **विरमन्ति** | – | वि + रम् धातु + लट् लकार + प्रथम पुरुष बहुवचन, रुकते हैं |
| **वात्यया** | – | आँधी से |
| **अभियुध्य** | – | अभि + युध् + क्त्वा (ल्यप्) प्रत्यय संघर्ष करके |
| **कापुरुषाः** | – | कायर |
| **प्रपलायन्त** | – | प्र + परा + अय् + लङ् लकार, भागते हैं, प्रथम पुरुष, बहुवचन |
| **अग्रतः** | – | अग्र + तस्, आगे |
| **संघटिष्यमाणं** | – | सम् + घट् + शानच् प्रत्यय, घटित होने वाले |
| **परिकम्पमानः** | – | परि + कम्प् + कानच् प्रत्यय, प्रथमा विभक्ति एकवचन, काँपता हुआ |
| **अतिवाहयन्ति** | – | अति + वह् + णिच् + लट् लकार, प्रथमपुरुष बहुवचन बिताते हैं |
| **पर्याकुलाः** | – | परि + आकुलाः, बेचैन |
| **अतिक्रान्तम्** | – | अति + क्रम् + क्त प्रत्यय, प्रथम पुरुष एकवचन, बाहर जा चुका है |
| **अप्यसाराः** | – | अपि + असाराः, सारहीन |
| **प्रकर्षम्** | – | अधिकता |
| **पुरस्सरम्** | – | पुरः सरतीति पुरस्सरः तम्, आगे |

## अभ्यासः

**1. संस्कृत भाषया उत्तरत–**

(क) उद्भिज्जपरिषद् इति पाठस्य लेखकः कः अस्ति?

(ख) उद्भिज्जपरिषदः सभापतिः कः आसीत्?

(ग) अश्वत्थमते मानवाः तृणवत् कम् उपेक्षन्ते?

(घ) सृष्टिधारासु मानवो नाम कीदृशी सृष्टिः?

(ङ) मनुष्याणां हिंसावृत्तिः कीदृशी?

(च) पशुहत्या केषाम् आक्रीडनम्?

(छ) श्वापदानां हिंसाकर्म कीदृशम्?

**2. रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) मानवा नाम सर्वासु सृष्टिधारासु ..................... सृष्टिः।

(ख) मनुष्याणां ..................... निरवधिः।

(ग) नहि ते करतलगतानपि ..................... उपघ्नन्ति।

(घ) परं तृणवद् उपेक्षन्ते ..................... ।

(ङ) न केवलमेते पशुभ्यो निकृष्टास्तृणेभ्योऽपि ..................... एव।

**3. अधोलिखितानां पदानां वाक्येषु प्रयोगं कुरुत–**

मायाविनः, श्वापदान्, निरवधिः, विसर्जयामास, बिभ्यति, पर्याकुलाः, लज्जन्ते, विरमन्ति, कापुरुषाः, प्रकटयति।

**4. सप्रसङ्गं हिन्दीभाषया व्याख्या कार्या–**

मनुष्याणां हिंसावृत्तिस्तु निरवधिः। पशुहत्या तु तेषाम् आक्रीडनम्। केवलं विक्लान्तचित्तविनोदाय महारण्यम् उपगम्य ते यथेच्छं निर्दयं च पशुघातं कुर्वन्ति। तेषां पशुप्रहार–व्यापारमालोक्य जडानामपि अस्माकं विदीर्यते हृदयम्।

**5. प्रकृति-प्रत्ययविभागः क्रियताम्–**

निकृष्टतमा, उपगम्य, प्रवर्तमाना, अतिक्रान्तम्, व्याख्याय, कथयन्तु, उपघ्नन्ति, आक्रीडनम्

**6. सन्धिविच्छेदं कुरुत-**

मानवा इव, भवन्तो नित्यम्, स्वोदरपूर्तिम्, हिंसावृत्तिस्तु, आत्मोन्नतिम्, स्वल्पमपि

**7. अधोलिखितानां समस्तपदानां विग्रहं कुरुत-**

महापादपाः, सृष्टिधारासु, करतलगतान्, वीरपुरुषाः, शान्तिसुखम्

## योग्यताविस्तारः

(1) **प्रचुरोदकवृक्षो यो निवातो दुर्लभातपः।**
**अनूपो बहुदोषश्च समः साधारणो मतः॥** *चरकसंहिता*

(2) **मानवं पुत्रवद् वृक्षास्तारयन्ति परत्र च।**
**पुत्रवत्परिपाल्यास्ते पुत्रास्ते धर्मतः स्मृताः॥** *महाभारत अनुशासनपर्व*

(3) **एतेषां सर्ववृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।**
**चातुर्मासे विशेषेण विना यज्ञादिकारणम्॥** *महाभारत अनुशासनपर्व*

(4) **एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।**
**वासितं वै वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥** *महाभारत अनुशासनपर्व*

(5) **''दशकूपसमा वापी दशपुत्रसमो द्रुमः''।**
**वृक्षविषयिण्यः ईदृश्य अन्या सूक्तयोऽपि गवेषणीयाः॥**